Scope of Guidance

निर्देशन जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है अतः जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन निर्देशन का कार्य क्षेत्र कहा जा सकता है।

निर्देशन के कार्य क्षेत्र को कुछ बिन्दुओं के अन्तर्गत अभिव्यक्त करने का प्रयास करेंगे।

(i) व्यक्ति का व्यक्तिगत जीवन (Personal Life of Individual) → प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत जीवन में अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक आदि। ये समस्याएं व्यक्ति को तोड़कर रख देती हैं। किन्तु एक कुशल निर्देशन व्यक्ति को इन समस्याओं से न केवल उबारता है बल्कि उसे जीवन में सफलता भी प्राप्त कराता है। अतः व्यक्ति का सम्पूर्ण वैयक्तिक जीवन निर्देशन का कार्य क्षेत्र कहा जा सकता है।

(ii) व्यक्ति का सामाजिक जीवन (Social Life of Indivi
व्यक्ति परिवार के सम्पर्क में आते ही अपना सामा
जीवन जिसे हम पारिवारिक जीवन कहते हैं और
जीना आरम्भ कर देता है। धीरे-धीरे बढ़

समाज के सीधे सम्पर्क में आता है। और अनेक सामाजिक समस्याओं का सामना करने लगता है। इन समस्याओं के समाधान के लिए उसे निर्देशन की आवश्यकता अनुभव होती है। हम कह सकते हैं कि व्यक्ति के समस्त सामाजिक सम्बन्ध निर्देशन के कार्य क्षेत्र में आते हैं।

(iii) व्यक्ति के शैक्षिक क्रियाकलाप → (Educational Activity of Individual)

विद्यालय में प्रवेश के बाद विषय चयन से लेकर विषय को समझने, उनकी कठिनाईयां दूर करने, विद्यार्थियों के पारस्परिक सम्बन्ध, विद्यार्थियों और अध्यापकों के आपसी सम्बन्ध, विद्यार्थी और कार्यालय, विद्यार्थी और चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी तथा विद्यार्थी की अध्ययन से सम्बन्धित अन्य समस्याएं, सभी निर्देशन के कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत आती हैं। क्योंकि बिना निर्देशन के इन समस्याओं का समाधान करना सम्भव नहीं है।

(iv) व्यक्ति के व्यावसायिक कार्यकलाप → (Vocational Activity of Individual) →

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन यापन के लिए कोई न कोई कार्य अवश्य करता है। जीवन यापन के लिए किया जाने वाला कार्य व्यवसाय की श्रेणी में आता है। बिना उपयुक्त निर्देशन के उचित व्यवसाय का चयन नहीं किया जा सकता। व्यवसाय चयन के बाद भी उसके व्यावसायिक जीवन में औ

Scanned with CamScanner

समस्याएँ आती रहती है। इन समस्त समस्याओं का निदान करने के लिए निर्देशन की आवश्यकता पड़ती है। अतः व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यावसायिक जीवन निर्देशन के व्यापक क्षेत्र के अन्तर्गत आता है।

(1) शैक्षिक निर्देशन के क्षेत्र में निर्देशन प्रक्रिया का उपयोग
(i) वांछित पाठ्यक्रम पर आधारित विषयों का चयन करने में।
(ii) पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के चयन हेतु
(iii) नवीन पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में विचार करने में
(iv) अधिगम प्रक्रिया को निरन्तर अपेक्षित व्यावहारिक रूप बनाये रखने की दृष्टि से।
(v) राष्ट्रीय एकता पर आधारित कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु प्रेरित करने की दृष्टि से।
(vi) अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या का समाधान करने के लिए।
(vii) पोत शिक्षा पर आधारित कार्यक्रमों को दिशा में प्रेरित करने हेतु।

(2) शैक्षिक क्षेत्र के समान ही व्यावसायिक क्षेत्र में भी निर्देशन की भूमिका का विशेष महत्व है—
(1) योग्यतानुकूल व्यवसाय का चयन करने में
(2) व्यावसायिक क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों से परिचित कराने के लिए।
3. व्यावसायिक अवसरों में विविधता की दृष्टि से
4. श्रम एवं उद्योग की परिस्थितियों में वांछित परिवर्तन करने के लिए
5. विशेषीकरण की दिशा में प्रेरित करने हेतु तथा
6. नव विकसित तकनीकी से परिचित कराने के लिए।